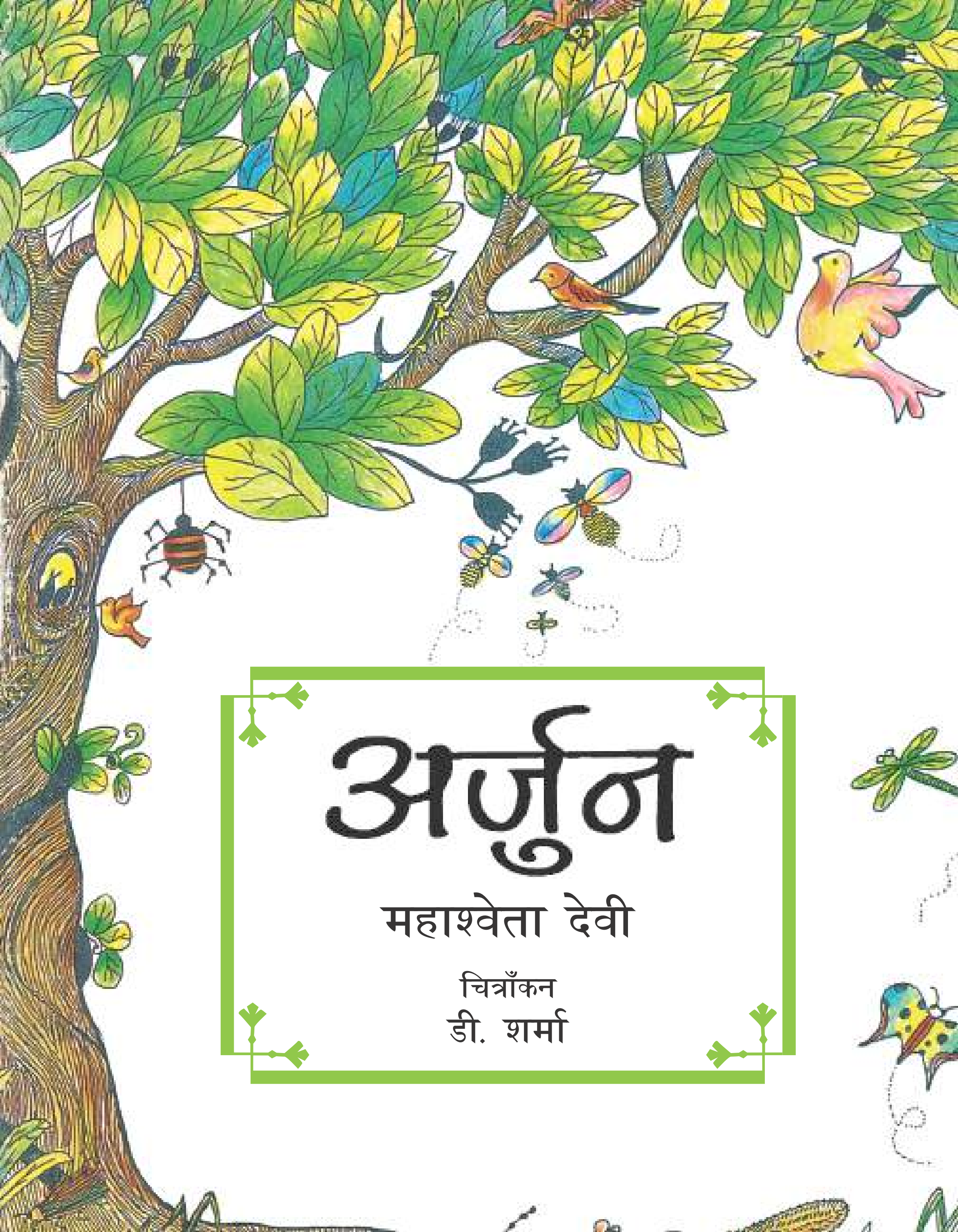

अर्जुन

महाश्वेता देवी

चित्राँकन
डी. शर्मा

महाश्वेता देवी

महाश्वेता देवी बंगला भाषा की प्रसिद्ध लेखिका होने के साथ-साथ एक कर्मठ समाज सेविका भी हैं। उन्होंने विश्वभारती, शान्तिनिकेतन से शिक्षा ग्रहण की। कुछ समय तक वे एक अध्यापिका भी रहीं। सन् 1956 में उनकी पहली पुस्तक, *झाँसीर रानी,* प्रकाशित हुई। उनके लगभग 42 उपन्यास, 15 कहानी संकलन और 5 बाल-पुस्तकें प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी कुछ प्रसिद्ध कृतियाँ हैं, *हॉजार चुराशिर माँ, अग्निगर्भ* और *अरण्येर अधिकार,* जिसे 1979 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

उन्होंने पुरूलिया में रहकर वहाँ के आदिवासियों के उत्थान के लिए कार्य किया है। इसके लिए उन्हें 1986 में पद्मश्री सम्मान प्राप्त हुआ था।

KATHA

पहला संस्करण 1998, दूसरा संस्करण 2004, तीसरा संस्करण 2009
चौथा संस्करण 2010, पाँचवाँ संस्करण 2010, छठवाँ संस्करण 2010
कृति स्वामित्व © कथा, 1998

सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।
नई दिल्ली द्वारा मुद्रित

ISBN 978-81-85586-63-2

कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्देश्य है, बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना।
ए-3 सर्वोदया एनक्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नई दिल्ली–110017
दूरभाषः 2652 4350, 2652 4511
फैक्सः 2651 4373
ई मेलः marketing@katha.org . kathakaar@katha.org
इंटरनेटः http://www.katha.org

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज़ बनता है।
इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों के एक स्कूल, कथाशाला को दिया जाएगा।

अर्जुन

लेखक
महाश्वेता देवी

चित्राँकन
डी. शर्मा

(मूल बंगला भाषा से अनूदित व रूपांतरित)

कथा, नई दिल्ली

अगहन बीतने वाला है, पूस अभी शुरू नहीं हुआ है। अभी न उतनी ठंड़ पड़ रही है, और न धूप में नरमी ही आई है।

केतु शबर ने दिन भर विशाल महतो के खेत में धान काटा था। शाम को बैठा यह सोच रहा था कि थोड़ी कच्ची कहीं से मिल जाती तो मज़ा आ जाता। वह जानता है मिलेगी नहीं, पर सोचने में क्या लगता है?

उसकी बहू महनी घर पर नहीं है। जब पति जेल में होता है तो वह धान काटकर और जंगल में शिकार करके गुज़ारा करती है।

जंगल कटवाता है राम हालदार और जेल काटते हैं केतु वगैरह। केतु क्या करे, उसे शाम को चार रुपये चाहिए ही चाहिए, “कहो तो पेड़ काटे, कहो तो आदमी,” वह राम हालदार से कहता है।

सरकारी जंगल काटने के अपराध में केतु जेल जाता है, और राम हालदार दूसरे केतुओं की तलाश में घूमता है।

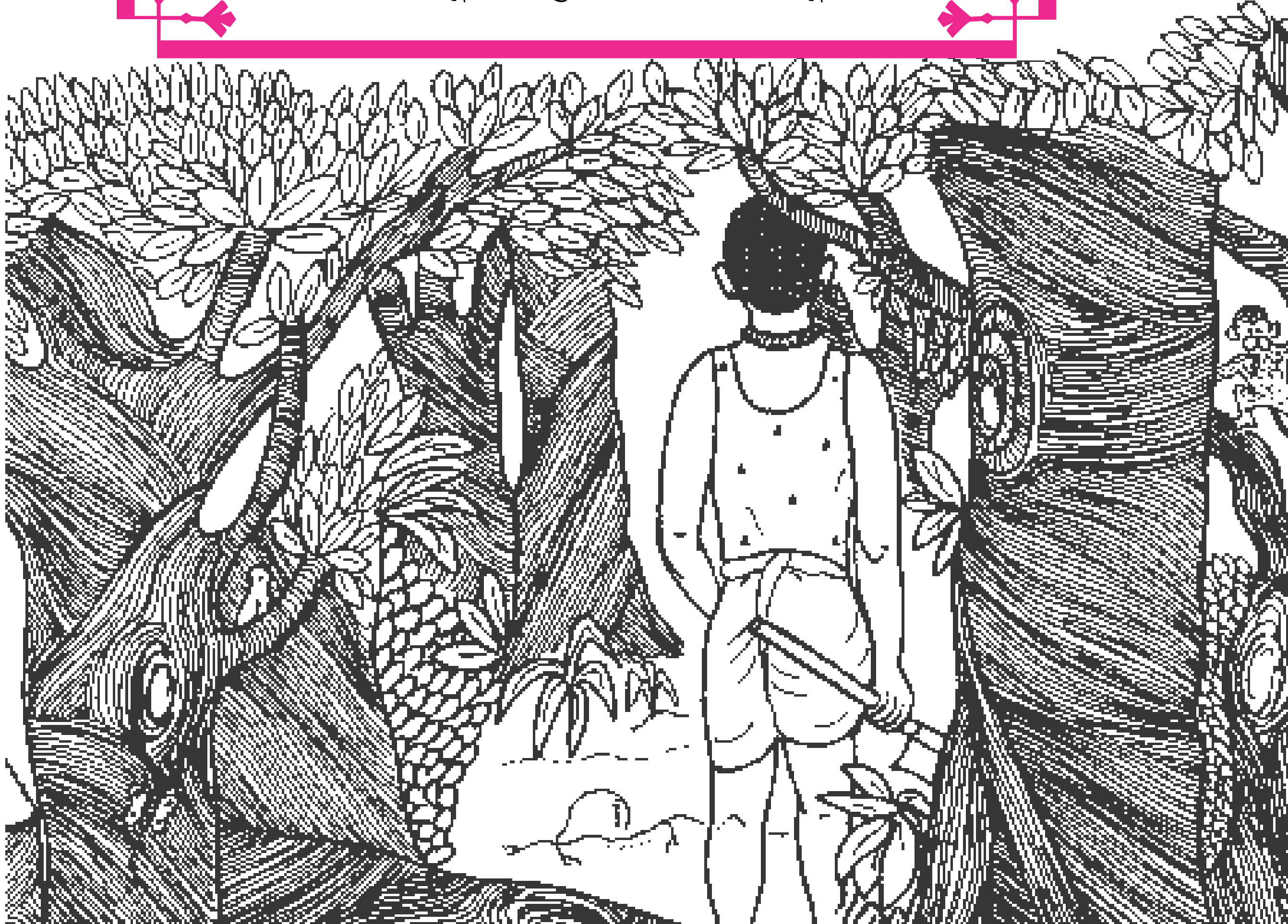

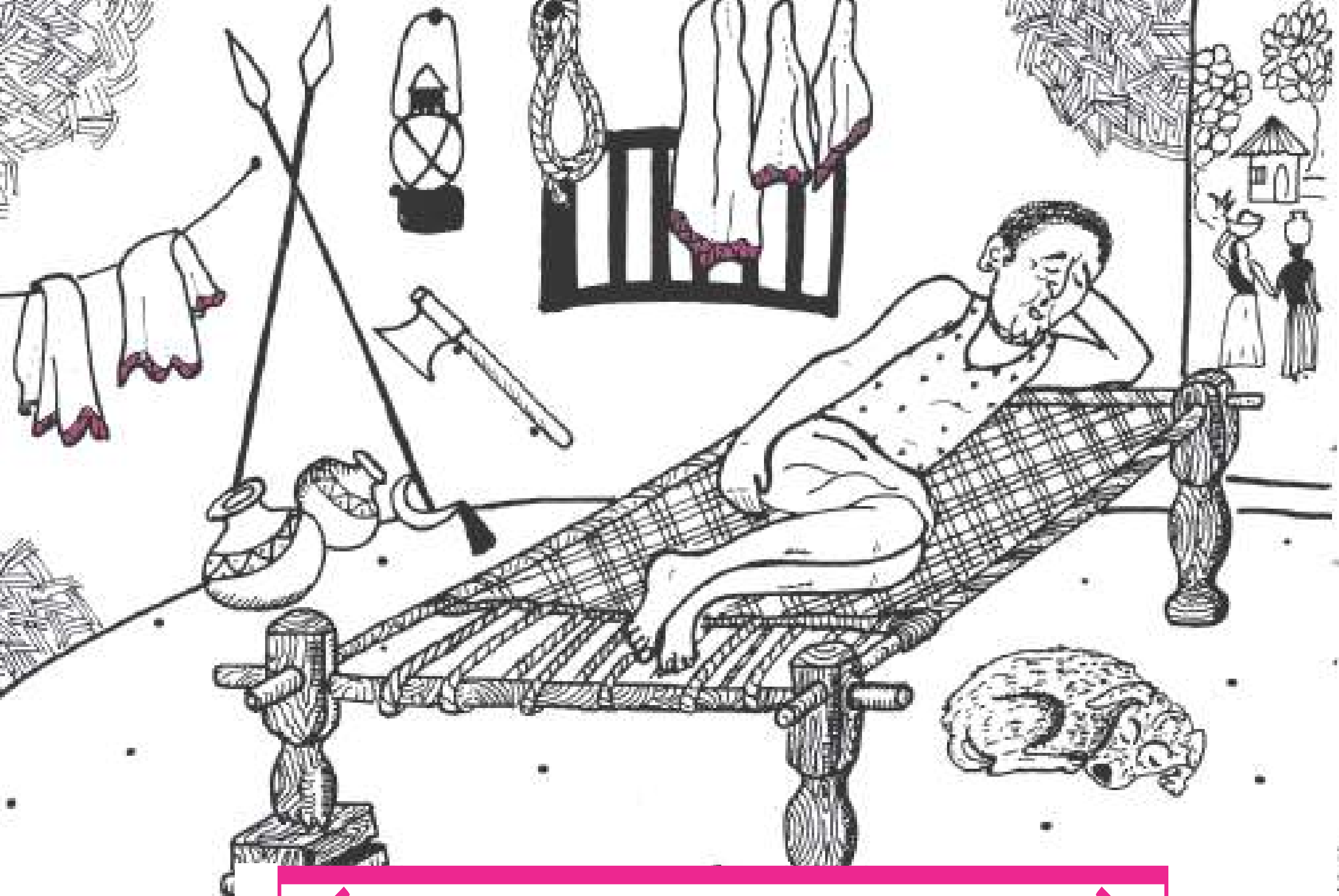

केतु ज़्यादा सोच नहीं पाता। पुरुलिया के शबर परिवार में जन्म लेने के बाद जंगल में हाथ लगाना ही होगा। जेल भी जाना होगा। यह एक नियम है।

केतु जेल जाएगा तो महनी काम ढूँढ़ने बाहर जाएगी ही – यह भी वैसा ही नियम है।

ऐसे नियमित जीवन में सूनी झोंपड़ी का धुँधलापन काटने दौड़ता है। टूटता हुआ शरीर, कच्ची की माँग करता है। थोड़ा नशा, थोड़ी यादें।

ऐसे में आ पहुँचता है विशाल महतो।

“केतु रे, तेरे से बात करनी है।”

“भोट की बात, बाबू?”

“अरे नहीं रे, वो तो मैं जिसे कहूँगा उसे ही देगा, है न?”

“हाँ, बाबू।”

“खैर, वोट की बात रहने दे। काम की बात सुन।”

राम हालदार और विशाल महतो दो अलग-अलग गुटों के नेता हो सकते हैं, मगर केतु की नज़र में दोनों एक हैं। उनकी नज़रों में वह बुद्धू बना रहता है। इस इलाके में टिकने के लिए उसे इन दोनों देवताओं की ज़रूरत है।

वे दोनों भी जानते हैं कि काम कराने और जेल काटने के लिए शबर हैं ही। इन दोनों बातों को न मानने की हिम्मत कहाँ है उनमें।

केतु को जिज्ञासा होती है। वोट पड़ने वाले हैं। फिर भी वोट की बात नहीं हैं तो कोई बुरा काम ही होगा।

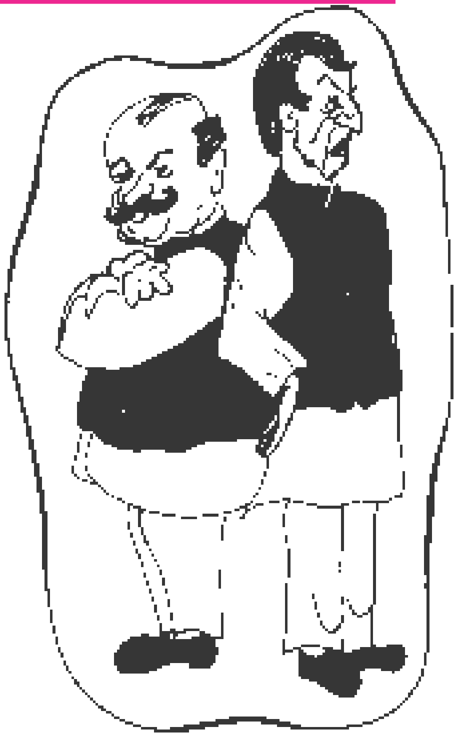

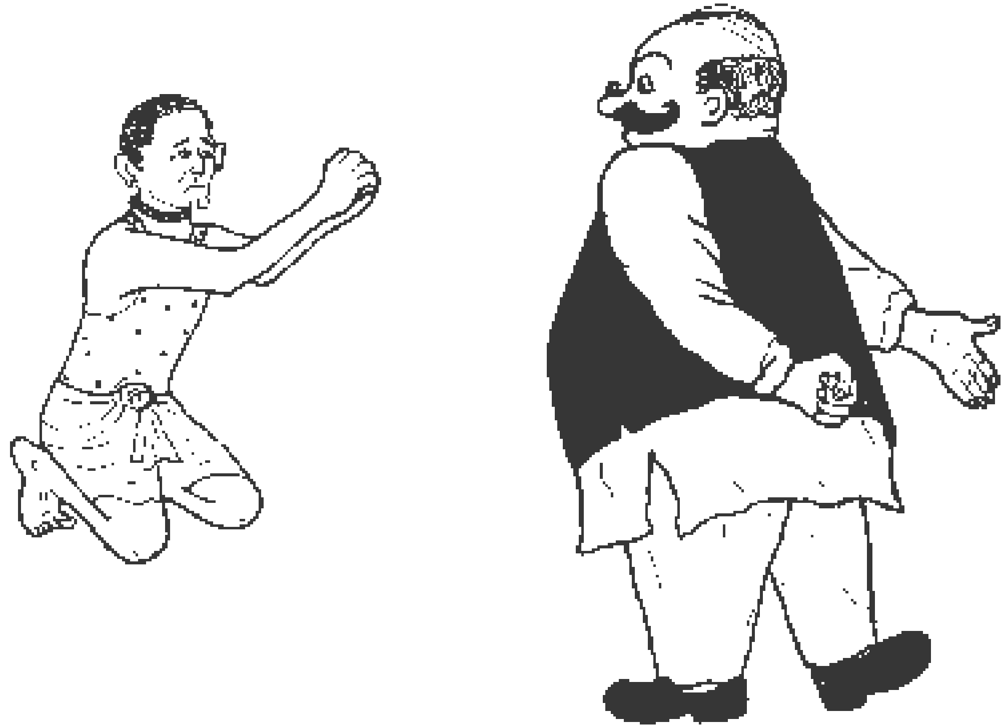

"क्या काम है, बाबू?"

"तिराहे पर का अर्जुन का पेड़ काटना है।"

"बाबू, अभी-अभी तो जेल से आया हूँ।"

"मैं फिर भिजवाना चाहूँ तो तू रोक लेगा?"

"नहीं बाबू।"

"अरे, मेरे कहने पर पेड़ काट रहा है, किसकी मजाल है तुझे जेल भेजे?"

केतु के दिमाग़ में विचार दौड़ने लगा। सच ही तो है। राम हालदार के कहने पर जंगल काटो जो जेल जाना पड़ता है। मगर विशाल बाबू तो हाकिम हैं।

उनके कहने पर पेड़ काटा तो जेल नहीं होगी।

अचानक वह बोल पड़ता है, “बाबू, चुनाव होने वाला है। इसलिए इस बार पक्की सड़क होगी, क्या इसलिए पेड़ कटवा रहे हो?”

“सड़क के लिए नहीं रे। पेड़ मुझे चाहिए।”

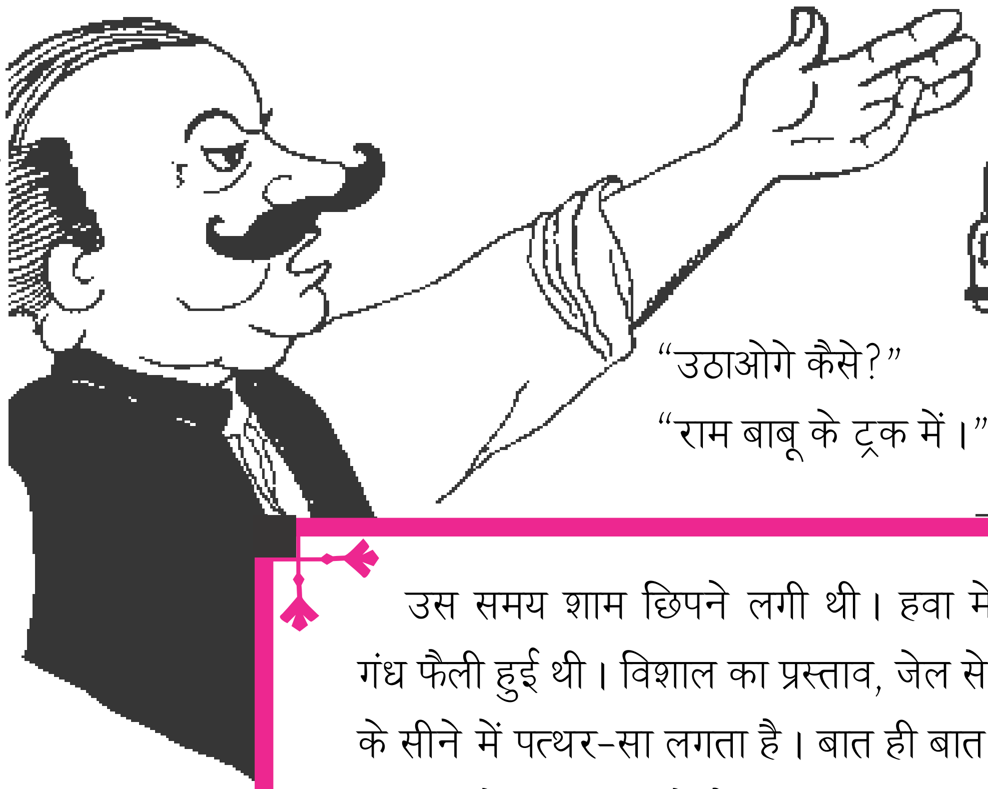

“उठाओगे कैसे?”

“राम बाबू के ट्रक में।”

उस समय शाम छिपने लगी थी। हवा में धान की गंध फैली हुई थी। विशाल का प्रस्ताव, जेल से लौटे केतु के सीने में पत्थर-सा लगता है। बात ही बात में ये लोग आदमी को मरवा डालते हैं। एक पंचायत प्रधान है, तो दूसरे का लकड़ी चीरने का कारखाना। वैसे दोनों

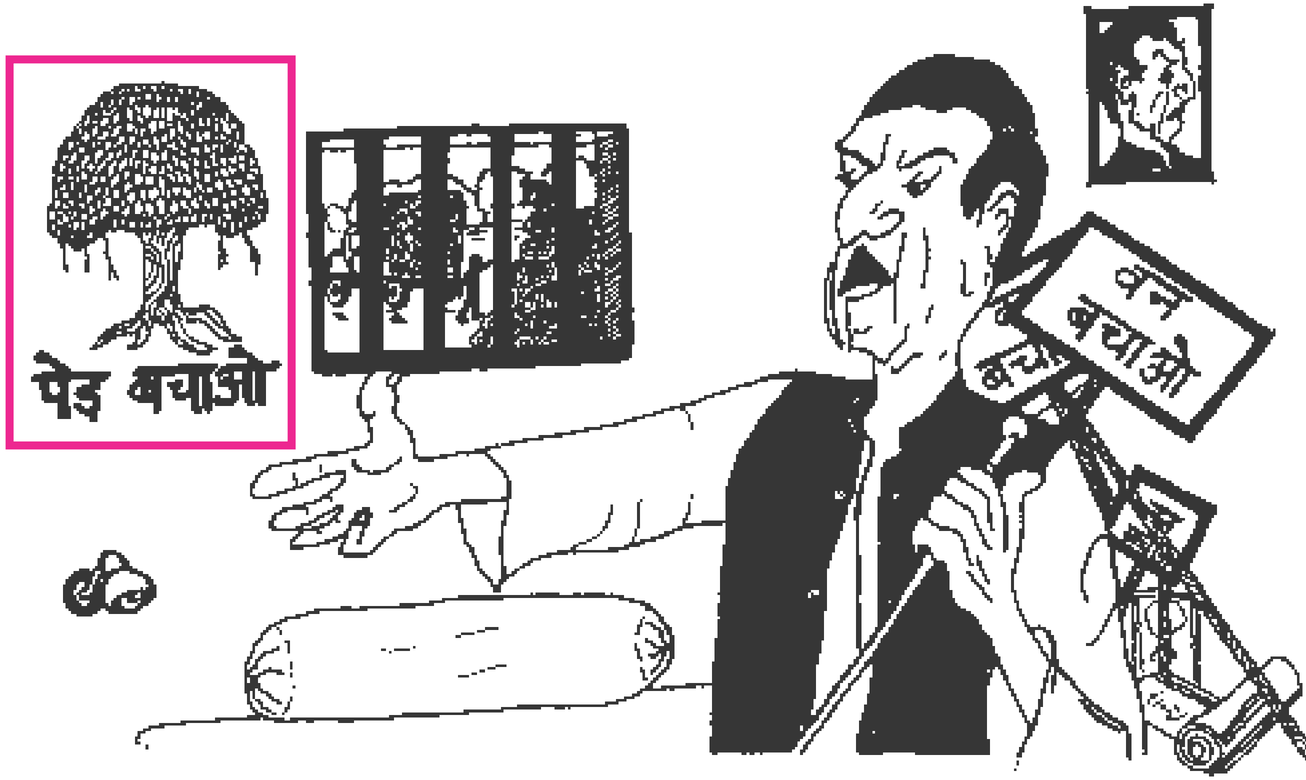

विरोधी हैं, पर विशाल अगर पेड़ कटवाए तो राम हालदार ट्रक में उठाकर जहाँ विशाल कहे, पहुँचा देगा।

राम हालदार का बड़ा कारोबार है। पहले “वन बचाओ” का इश्तहार लगवाता है, फिर चोरी से सरकारी जंगल के जंगल उजड़वा देता है। जो हाथ पेड़ काटते हैं, उनमें कीमती उपहार और शराब थमा देता है। दोषी हो या निर्दोष, शबरों पर जंगल के अधिकारी और पुलिस, केस चलाते ही रहते हैं।

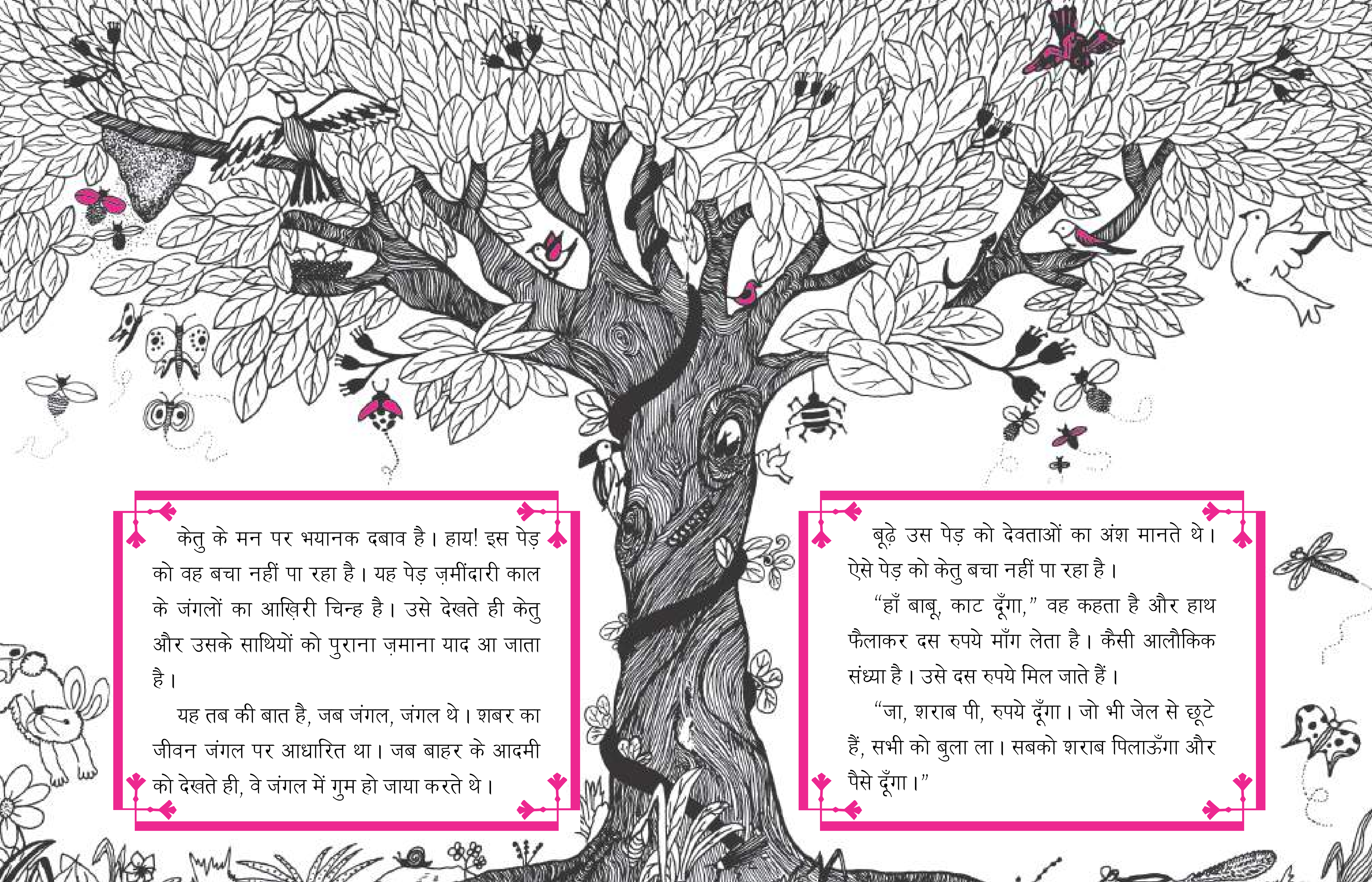

केतु के मन पर भयानक दबाव है। हाय! इस पेड़ को वह बचा नहीं पा रहा है। यह पेड़ ज़मींदारी काल के जंगलों का आख़िरी चिन्ह है। उसे देखते ही केतु और उसके साथियों को पुराना ज़माना याद आ जाता है।

यह तब की बात है, जब जंगल, जंगल थे। शबर का जीवन जंगल पर आधारित था। जब बाहर के आदमी को देखते ही, वे जंगल में गुम हो जाया करते थे।

बूढ़े उस पेड़ को देवताओं का अंश मानते थे। ऐसे पेड़ को केतु बचा नहीं पा रहा है।

“हाँ बाबू, काट दूँगा,” वह कहता है और हाथ फैलाकर दस रुपये माँग लेता है। कैसी आलौकिक संध्या है। उसे दस रुपये मिल जाते हैं।

“जा, शराब पी, रुपये दूँगा। जो भी जेल से छूटे हैं, सभी को बुला ला। सबको शराब पिलाऊँगा और पैसे दूँगा।”

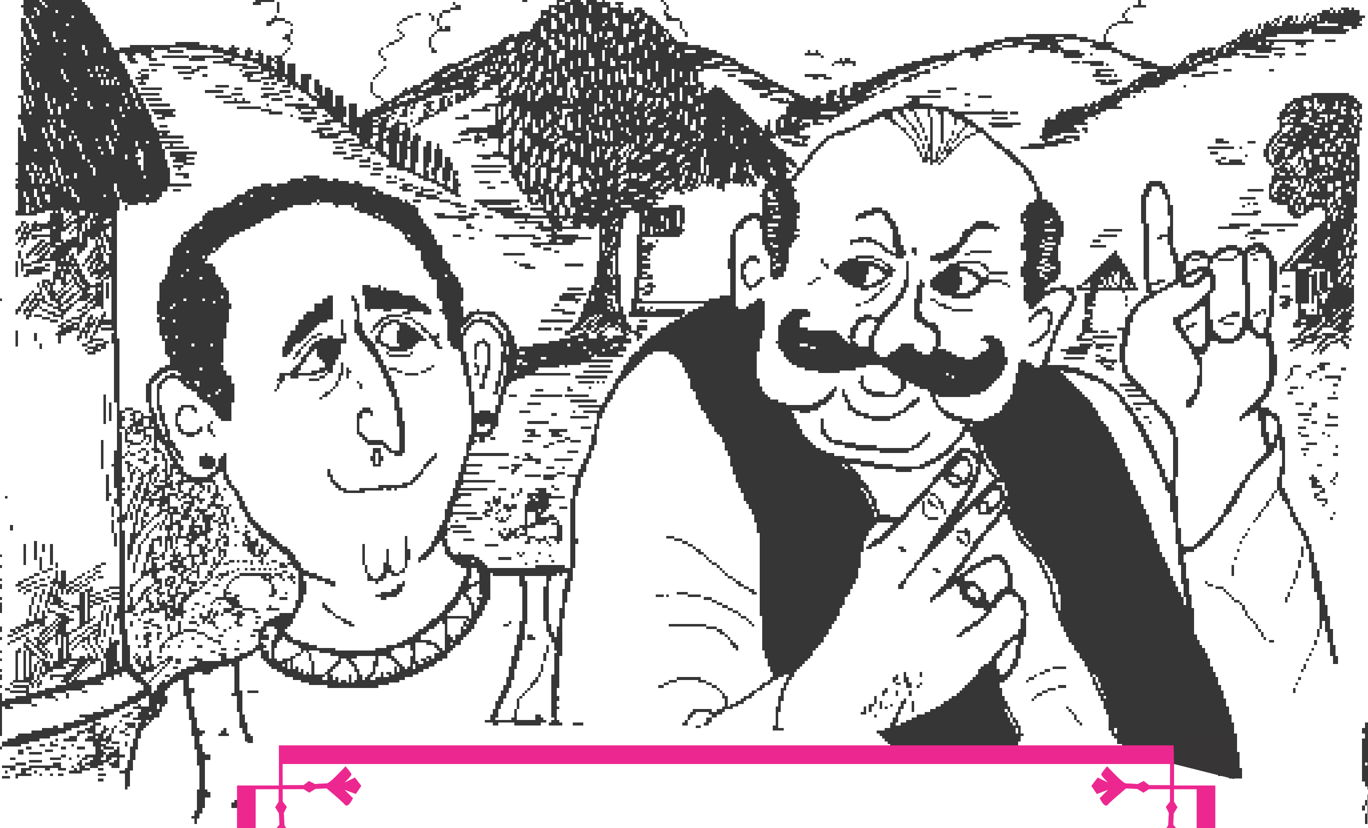

ऐसे लोगों को इतने पैसे कौन देता है। मगर विशाल बाबू दे रहा है।

"अच्छा! मैं अब शहर जा रहा हूँ, मीटिंग करनी है। इश्तहार ले आऊँगा।"

"बाबू, थोड़े इश्तहार मुझे देना, ज़मीन पर बिछाऊँगा। बिछाने से ठंड नहीं लगती।"

"दूँगा, दूँगा, तू दो-चार दिन के अन्दर पेड़ काट दे। मैं शहर से आकर उठवा लूँगा।"

"अर्जुन का पेड़?"

"हाँ रे, वही।"

विशाल चला जाता है। केतु परेशान होकर वनमाली, दिगा और पीताम्बर के पास जाता है। वह शराब भी साथ लाया है। इसलिए बहुत आवभगत होती है। सभी जेल काटकर लौटे हैं। जो पेड़ काटेंगे, जेल जाएँगे और राम हालदार की कोठियाँ बनेंगी - यही नियम है।

दिगा ही सबसे अधिक चार दर्जा पढ़ा है। सारी बात सुनकर कहता है, "सोचूँगा।"

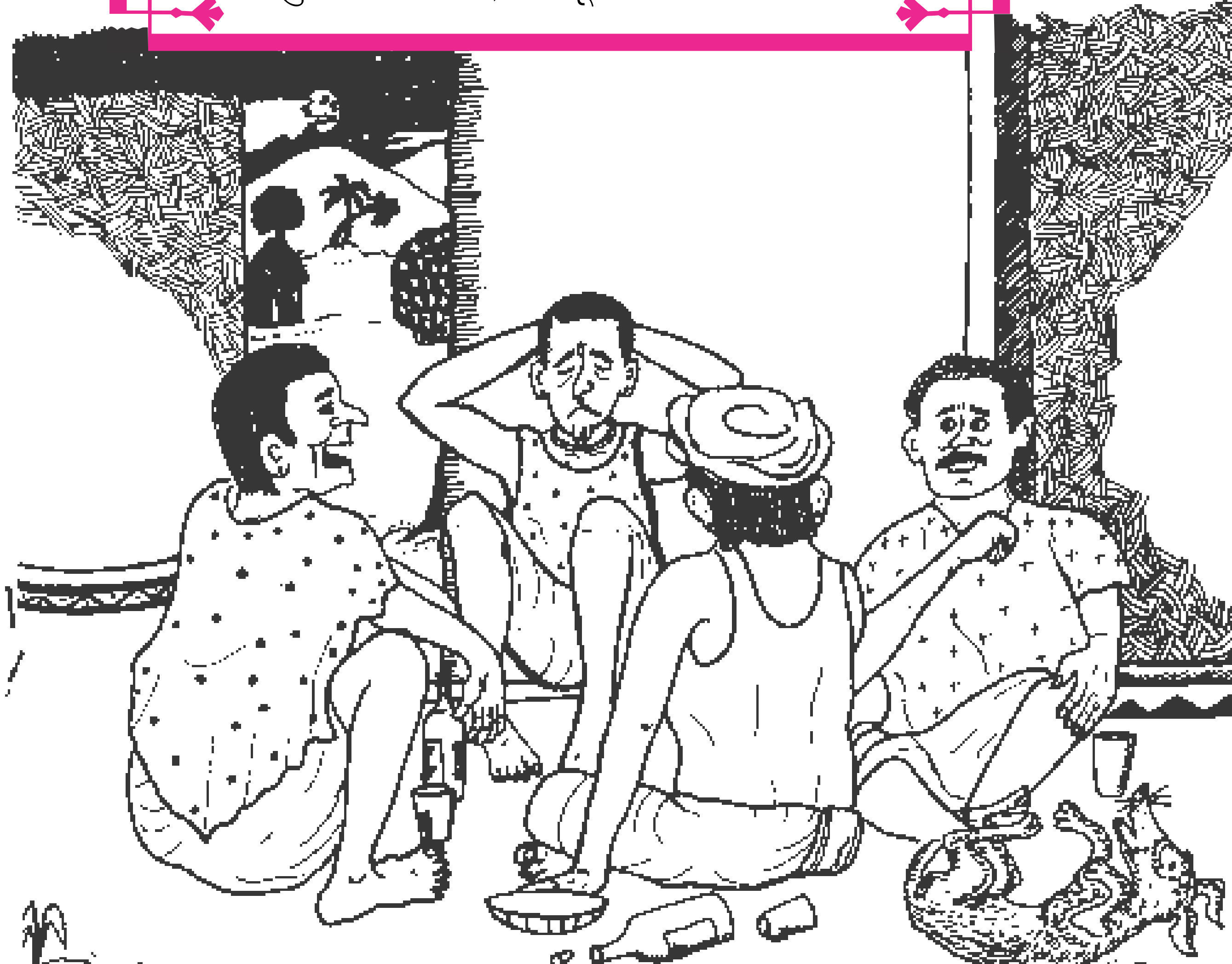

अर्जुन का पेड़ तिराहे पर जाने कब से खड़ा है। लगता है अनादिकाल से खड़ा है, अनंतकाल तक रहेगा। कोई ध्यान नहीं देता। पर उसके काटे जाने की बात, सभी के कलेजे में गड़ रही है। जब यह पेड़ तरुण था, तब सभी शबर उसके नीचे पूजा देकर शिकार पर निकलते थे। आज बुढ़ापे में भी यह कितना सुन्दर दिखता है। उजला शरीर, आकाश में तना हुआ सिर। चैत, बैसाख में छाँह देता है। तिराहे पर का यह अर्जुन का पेड़ हमें ...।

चारों शबर, नशे में धुत सोच रहे हैं। सोच रहे हैं, ब्याह या त्यौहार पर हम वहाँ ढोल-ताशे बजाते हैं। बच्चे का मुंडन हो, तो केश उसी पेड़ के नीचे गाड़ते हैं।

"यह तो दवाई का पेड़ है।" पीताम्बर फुसफुसाता है। बाँधना जागरण के दिन, संथाल उसी पेड़ के नीचे गोरू नचाने जाते हैं।

पेड़ काटने पर जेल, न काटने पर भी जेल।

"कितने दिनों से यहाँ, हमारा पहरा दे रहा है!" पीताम्बर कहता है।

धीरे-धीरे, उस पेड़ से जुड़ी घटनाएँ उन लोगों को याद आने लगती हैं। ये मुट्ठी भर लोग, जिन्हें सरकार और समाज उजाड़ता है, उपयोग करता है, फिर जेल भिजवा देता है, सहसा समझ रहे हैं कि उस पेड़ की स्थिति भी उन्हीं की तरह है।

"विशाल बाबू तो शहर जा रहे हैं। पैसे माँग लेता हूँ।"

"काटोगे पेड़ तुम?"

"पाँच आदमी काफी हैं। सौ रुपये माँगेंगे हम।"

"जेल जाना होगा।"

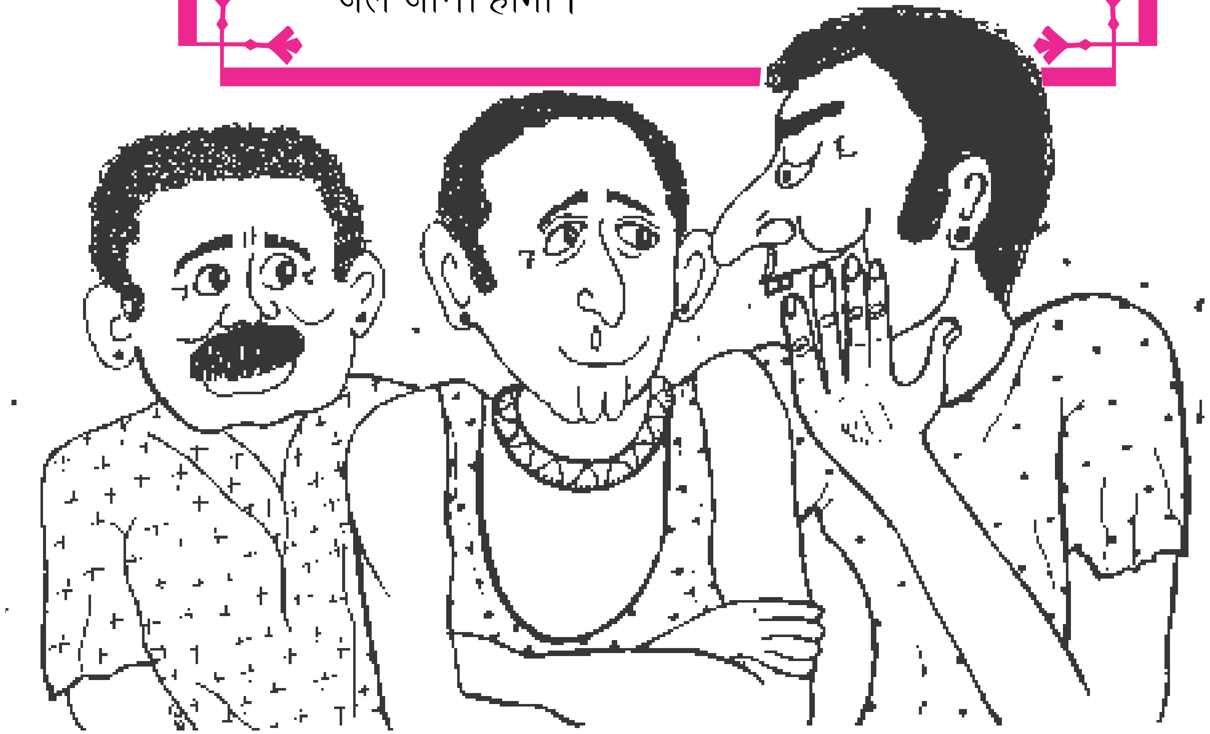

दिगा धूर्त और चालाक हँसी हँसता है। बहुत बार जेल जाकर, शबर के चेहरे पर भी मुखौटा चढ़ गया है। असली मुख छिपा रहता है।

चार अक्षर सीखकर पंडित, जगह-जगह के जेल-जीवन का अनुभवी, दिगा शबर विशाल बाबू को माँ की तरह विश्वास दिलाता है।

"बाबू, तू निश्चिन्त होकर जा, भोट की मीटिंग कर। पैसा दे जा। परसों देखना, पेड़ गायब मिलेगा।"

विशाल महतो संतुष्ट होकर चला जाता है।

शहर पहुँचते ही हर बाज़ार में सभा। यहाँ भी भाग-दौड़ ही रहती है। बहू के लिए न जाने कितने ही काम हैं।

बहुत निश्चिन्त होकर विशाल वानडीही लौटता है। सड़क के न बनने से कितनी परेशानी है। एक नदी के बाद दूसरी पार करो, बस पकड़ो, उबड़-खाबड़ रास्ते पर चलो। चुनाव के आसार तो अच्छे ही दिख रहे हैं।

गाँव के पास आते ही उसका सिर घूमने लगता है। आकाश में तना, अर्जुन वृक्ष खड़ा सिर हिला रहा है। जैसे गाँव का पहरेदार हो।

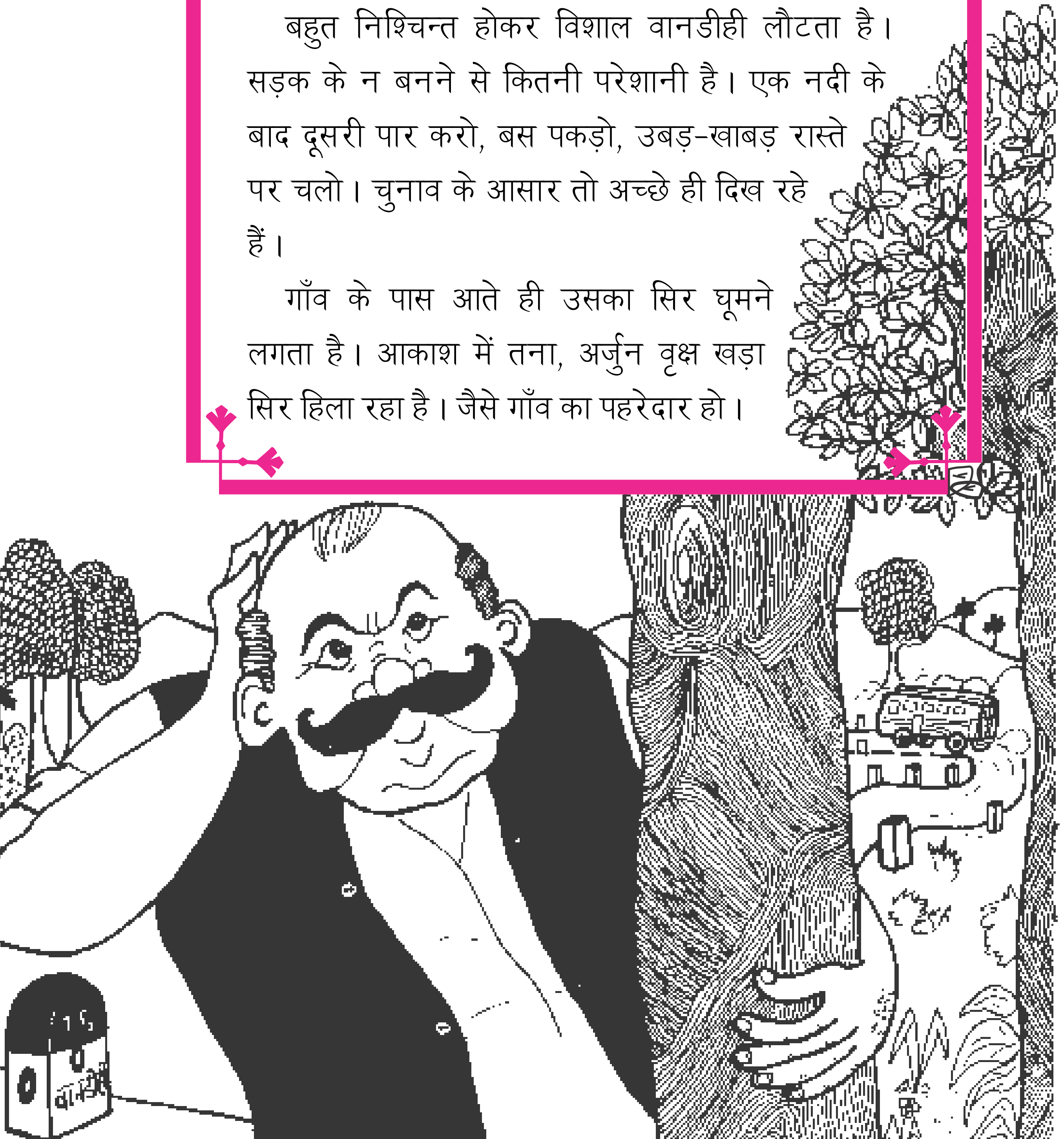

उसे सुनाई पड़ता है ढोल-नगाड़े और भीड़ का शोर। विशाल गाँव में घुसता है। भीड़ उमड़ रही है, पेड़ के तने पर फूल-मालायें लिपटी हुई हैं। पूजा चल रही है।

राम हालदार साईकिल पकड़े खड़ा है।

“क्या बात है?”

“ग्राम देवता बना दिया पेड़ को।”

“किसने?”

“दिगा शबर को सपना आया था। तुमने भी रुपये दिए हैं, चबूतरा बनाने के लिए।”

“हम इनको बुद्धू समझते थे। इन्होंने तो हमें उल्लू बना दिया।” विशाल हार मानकर आगे बढ़ जाता है।

भीड़! क्या भीड़ है! केतु घूम-घूमकर नाच रहा है।

ये पेड़, ये लोग, न जाने आज उसे क्यों अजनबी लग रहे हैं। भय, भयंकर भय लग रहा है उसे।

ज़रा सुनिए ...

... मैं अर्जुन का पेड़ हूँ। मैं आभारी हूँ शबरों का, जिन्होंने विशाल जैसे लालची ठेकेदार से मेरी रक्षा की। मैं जानता हूँ कि आपको घर बनाने, खाना पकाने आदि के लिये लकड़ी चाहिए। मगर हम पेड़ों की कटाई का परिणाम जानते हैं आप?

धरती का विनाश! जी हाँ।

हम ही आपको साफ हवा देते हैं।

फल, फूल देते हैं।

हमारी शाखाओं पर बसे रंग-बिरंगे पक्षी इस धरती को जीवंत बनाते हैं।

हम ही वर्षा लाते हैं।

ज़रा सोचिए ...

हमारे बिना आपका जीवन नष्ट हो जाएगा।

इस विनाश को रोकिए! पेड़ लगाईए!! धरती बचाईए!!!

उलट पुलट

नीचे एक खेल पहेली है। आइए देखें, आपने कहानी को कितनी अच्छी तरह से समझा है। बाईं ओर के वाक्य आपको हल ढूंढने में मदद करेंगे। दाईं तरफ के वर्ग में हर उत्तर पर चौकोर बनाइए। एक हमने आपके लिए कर दिखाया है।

तो खेलें ...

1. केतु की बहू।
2. विशाल जैसा दूसरा नेता।
3. कहानी के पेड़ का नाम।
4. विशाल यहाँ गया था।
5. केतु का मित्र।
6. पेड़ को क्या बना दिया?
7. शबर जंगल में करते हैं।
8. पेड़ काटने पर क्या मिलती है?
9. पेड़ कहाँ था?
10. विशाल को लग रहा था।

रा	म	हा	ल	दा	र
प	ति	रा	हा	का	ग्रा
अ	दि	भ	शि	का	र
र्जु	गा	य	म	ट	दे
न	य	श	ह	र	व
स	ज़ा	र	नी	क	ता

उत्तर : 1. महनी 2. राम हालदार 3. अर्जुन 4. शहर 5. दिगा 6. देवता 7. शिकार 8. सज़ा 9. तिराहा 10. भय

कहानी के कठिन शब्दों के अर्थ

नीचे दिए गए शब्द, इसी कहानी से लिए गए हैं। इन शब्दों के सरल अर्थ भी दिए गए हैं। इन्हें अपनी बोलचाल की भाषा में प्रयोग करने का प्रयास करें।

- **अपराध:** बुरा काम जिसकी सज़ा दी जाए
- **नियमित:** हर बार एक ही समय पर
- **जिज्ञासा:** जानने की इच्छा
- **मजाल:** हिम्मत
- **हाकिम:** प्रधान या बड़ा अधिकारी
- **प्रस्ताव:** राय
- **इश्तहार:** लोगों की जानकारी के लिए पोस्टर आदि
- **निश्चिंत:** बेफ़िक्र
- **निर्दोष:** जिसने अपराध न किया हो
- **अनादिकाल:** जब से समय (जीवन) शुरू हुआ
- **अनंतकाल:** समय जिसका कभी अंत न हो
- **संतुष्ट:** तृप्ति, तसल्ली

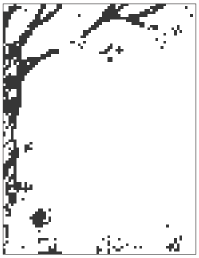

केतु परेशान है। गाँव के प्रधान विशाल महतो ने उसे अर्जुन के पेड़ को काटने के लिए कहा है। शबर आदिवासियों के लिए यह देवता-समान पेड़ बरसों पुराने जंगलों का आख़िरी चिन्ह है। क्या केतु और उसके साथी पेड़ को बचा पाएँगे?

सर्वश्रेष्ठ कथामाला भारत के महान लेखकों की एक शानदार कहानी श्रृंखला है। आइए अपने देश के साहित्य का ख़ज़ाना खोजें, इन कहानियों और इनसे जुड़े खेलों और अभ्यासों के ज़रिये!

इस पुस्तक की कहानी बंगला भाषा की सुप्रसिद्ध लेखिका **महाश्वेता देवी** ने लिखी है।